International Journal of Social Nexus Review

Volume 1 | Issue 1 | July 2026

Available online at: https://socialnexusreview.com/

माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा: स्थिति एवं चुनौतियाँ

कृष्ण कुमार भारती

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी

Email: krishanbharti12@gmail.com

Received: 11 June 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

सार (Abstract)

बालिका शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार माना जाता है, क्योंकि यह सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक सशक्तिकरण तथा मानव संसाधन विकास का आधार प्रदान करती है। माध्यमिक शिक्षा बालिका शिक्षा का महत्वपूर्ण चरण है इसी चरण में अनेक बालिकाएँ पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों से अपनी शिक्षा निरंतर जारी रखने में कठिनाइयों का सामना करती हैं। बालिका शिक्षा की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, समग्र शिक्षा, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, छात्रवृत्ति योजनाओं तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। इसके बावजूद क्षेत्रीय असमानताएँ, विद्यालय त्याग (ड्रॉपआउट), लैंगिक पूर्वाग्रह, सीमित आधारभूत सुविधाएँ तथा सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति का समग्र विश्लेषण करना, इसके समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना व विभिन्न सरकारी पहलों की समीक्षा करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध दृष्टिकोण अपनाया गया है तथा आवश्यक तथ्य एवं आँकड़े यू-डाइस प्लस (UDISE+), शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, विभिन्न सरकारी प्रतिवेदनों तथा उपलब्ध शोध साहित्य स्रोतों से संकलित किए गए हैं।

मुख्य शब्द: बालिका शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, यू-डाइस प्लस, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, समग्र शिक्षा, शैक्षिक चुनौतियाँ।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है। यदि समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाएँ शिक्षित एवं सशक्त हों, तो राष्ट्र के समग्र विकास की गति तीव्र हो जाती है। इसी कारण बालिका शिक्षा को राष्ट्रीय विकास की आधारशिला माना जाता है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक प्रयास किए गए। संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21(क) तथा 45 के माध्यम से शिक्षा एवं समान अवसरों को सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। इसके परिणामस्वरूप बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं के नामांकन संतोषजनक है, किंतु माध्यमिक स्तर पर अभी भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनके कारण बालिकाओं की शिक्षा प्रभावित होती है।

माध्यमिक शिक्षा बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण चरण है। इसी स्तर पर उनका व्यक्तित्व विकास, कैरियर निर्माण तथा सामाजिक चेतना का विकास होता है। वर्तमान समय में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, समग्र शिक्षा अभियान, छात्रवृत्ति योजनाएँ तथा निःशुल्क शैक्षिक सुविधाएँ प्रमुख हैं। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप विद्यालयों में बालिकाओं की उपस्थिति एवं नामांकन में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक समस्याएँ, लैंगिक भेदभाव, स्कूल से विद्यालय की दूरी, सुरक्षा का अभाव तथा अभिभावकों की सीमित जागरूकता जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में बालिकाओं

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.

© The Author(s) 2026. IJSNR Published by Shri Ram Niyamat Charitable Trust.

की शिक्षा अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना कर रही है। आज भी अनेक परिवारों में बालिकाओं की शिक्षा को बालकों के शिक्षा की तुलना में कम प्राथमिकता दी जाती है। आर्थिक विपन्नता, घरेलू कार्यों व पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ ज्यादातर लड़कियों की शिक्षा पर ही पड़ता है, परिणामस्वरूप विद्यालय त्याग (Dropout) की समस्या उत्पन्न होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में लैंगिक समानता व समावेशन को विशेष महत्व दिया गया है। डिजिटल शिक्षा, छात्रवृत्ति योजनाएँ, सामुदायिक सहभागिता तथा महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम बालिका शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों, सरकारी पहलों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य बालिका शिक्षा के समक्ष विद्यमान समस्याओं की पहचान करना तथा उनके समाधान हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना है।

भारत में बालिका शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

शिक्षा प्राचीन काल से ही व्यक्ति एवं समाज के सर्वांगीण विकास का आधार रही है। शिक्षा न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक, सांकृतिक व आर्थिक प्रगति का प्रमुख साधन भी है। किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक होती है, और यह भागीदारी तभी प्रभावी हो सकती है जब उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो। इस दृष्टि से बालिका शिक्षा का महत्व अत्यंत व्यापक है।

वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा तथा घोषा जैसी विदुषी महिलाओं का उल्लेख इस तथ्य का प्रमाण है कि उस समय महिलाओं को वेद, दर्शन, साहित्य एवं अन्य ज्ञान-विषयों के अध्ययन का अवसर प्राप्त था। अनेक महिलाएँ शास्त्रार्थ और बौद्धिक विमर्श में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं।

उत्तरवैदिक एवं मध्यकालीन काल में सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में गिरावट आई। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, लैंगिक भेदभाव तथा रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताओं के कारण अधिकांश बालिकाएँ औपचारिक शिक्षा से वंचित होने लगीं। परिणामस्वरूप महिलाओं की साक्षरता एवं सामाजिक सहभागिता में उल्लेखनीय कमी आई।

आधुनिक काल में सामाजिक एवं शैक्षिक सुधार आंदोलनों ने बालिका शिक्षा को नई दिशा प्रदान की। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले एवं सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिला शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से ज्योतिबा फुले के शैक्षिक प्रयासों व सावित्रीबाई फुले द्वारा बालिकाओं के लिए विद्यालयों की स्थापना भारतीय महिला शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। इन प्रयासों ने समाज में महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान में शिक्षा एवं समानता के अधिकार को विशेष महत्व प्रदान किया गया। अनुच्छेद 14, 15, 21-क तथा राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों के माध्यम से महिलाओं एवं बालिकाओं को समान अवसर उपलब्ध कराने का संवैधानिक आधार सुनिश्चित किया गया। इक्कीसवीं शताब्दी में भारत सरकार ने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए हैं, जिनमें समग्र शिक्षा, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन, संक्रमण दर तथा माध्यमिक शिक्षा में उनकी सहभागिता में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएँ, लैंगिक पूर्वाग्रह, आधारभूत सुविधाओं की कमी ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में शैक्षिक चुनौतियों के रूप में विद्यमान है।

माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति

माध्यमिक शिक्षा वह स्तर है जो प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य सेतु का कार्य करता है। यह स्तर बालिकाओं के व्यक्तित्व निर्माण, व्यावसायिक विकास एवं उच्च शिक्षा के लिए आधार तैयार करता है। इसलिए इस स्तर पर बालिकाओं की सहभागिता किसी भी राष्ट्र की शैक्षिक प्रगति का महत्वपूर्ण संकेतक मानी जाती है।

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विशेष रूप से बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न नीतियाँ, कार्यक्रम एवं योजनाएँ संचालित की गई हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप बालिकाओं की साक्षरता दर, विद्यालयों में नामांकन तथा शैक्षिक उपलब्धियों में निरंतर वृद्धि देखने को मिली है।

तालिका–1

भारत में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं के नामांकन की स्थिति- (2020-21 to 2025-26)

वर्ष	शिक्षा का स्तर	कुल नामांकन (करोड़ में)	लड़कियों का नामांकन (करोड़ में)	कुल नामांकन में लड़कियों का प्रतिशत
2020-21	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.83	1.86	48.56
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.63	1.31	49.80
2021 - 22	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.76	1.84	48.93
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.71	1.35	49.81
2022-23	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.79	1.83	48.28
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.77	1.38	49.81
2023-24	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.75	1.81	48.26
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.76	1.38	50.00
2024-25	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.72	1.81	48.59
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.76	1.39	50.13
2025-26	माध्यमिक स्तर (9-10)	3.83	1.86	48.56
	उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	2.88	1.45	50.34

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-1 से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2020–21 से 2025–26 के मध्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं के नामांकन में सकारात्मक प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की भागीदारी लगभग 48 प्रतिशत के आसपास स्थिर बनी रही, जबकि उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं का प्रतिशत 49.80 से बढ़कर 50.34 प्रतिशत तक पहुँच गया। इससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलाने तथा उन्हें शिक्षा से जोड़कर रखने के सरकारी प्रयास प्रभावी सिद्ध हुए हैं।

तालिका–2

भारत में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं का सकल नामांकन अनुपात (GER) प्रतिशत में

वर्ष /स्तर	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26
माध्यमिक स्तर (9-10)	79.5	79.4	80.1	78.0	80.0	83.4
उच्च माध्यमिक स्तर (11-12)	54.6	58.2	58.7	58.2	60.9	64.8

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-2 के अनुसार माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं का सकल नामांकन अनुपात वर्ष 2020–21 के 79.5 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2025–26 में 83.4 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार उच्च माध्यमिक स्तर पर GER 54.6 प्रतिशत से बढ़कर 64.8 प्रतिशत तक पहुँच गया है। यह वृद्धि दर्शाती है कि विद्यालय जाने योग्य आयु की अधिक संख्या में बालिकाएँ शिक्षा से जुड़ रही हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि यह संकेत देती है कि अब अधिक बालिकाएँ माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई जारी रख रही हैं।

तालिका–3

भारत में बालिकाओं की ड्रॉपआउट दर (प्रतिशत में)

वर्ष /स्तर	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26
प्राथमिक	0.7	1.4	7.8	1.7	1.9	0.1
उच्च प्राथमिक	2.3	3.3	8.3	5.3	2.9	3.4
माध्यमिक	14.2	12.3	15.4	12.6	9.6	8.0

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-3 से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की तुलना में माध्यमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर अधिक रही है। हालांकि वर्ष 2020–21 में 14.2 प्रतिशत की ड्रॉपआउट दर वर्ष 2025–26 में घटकर केवल 8.0 प्रतिशत रह गई है। यह कमी इस बात का प्रमाण है कि सरकारी योजनाओं, सामाजिक जागरूकता तथा विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं के कारण अधिक बालिकाएँ विद्यालय में बनी रह रही हैं। फिर भी माध्यमिक स्तर पर ड्रॉपआउट पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, बाल विवाह, घरेलू कार्यों का बोझ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा विद्यालयों की दूरी अभी भी प्रमुख कारण बने हुए हैं।

तालिका–4

माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की संक्रमण दर (Transition Rate) (प्रतिशत में)

वर्ष /स्तर	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26
उच्च प्राथमिक से माध्यमिक	90.1	87.8	86.1	82.9	87.3	88.7
माध्यमिक से उच्च माध्यमिक	72.5	77.6	69.5	69.1	72.4	80.7

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-4 के अनुसार उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर पर संक्रमण दर अधिकांश वर्षों में 85 प्रतिशत से अधिक रही, जबकि माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर यह दर वर्ष 2025–26 में 80.7 प्रतिशत तक पहुँच गई। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि अब बड़ी संख्या में बालिकाएँ एक शैक्षिक स्तर पूर्ण करने के बाद अगले स्तर में प्रवेश ले रही हैं। वर्ष 2022–23 एवं 2023–24 में संक्रमण दर में आई गिरावट संभवतः कोविड-19 के बाद उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव हो सकती है। इसके बाद पुनः वृद्धि यह दर्शाती है कि शिक्षा व्यवस्था सामान्य स्थिति की ओर लौट रही है।

तालिका–5

भारत में माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की प्रतिधारण दर (Retention Rate)

वर्ष /स्तर	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26
माध्यमिक (कक्षा 1 –10)	61.1	64.5	66.1	64.6	62.4	71.9
उच्च माध्यमिक (कक्षा 1 –12)	43.6	44.2	45.1	47.5	49.6	55.0

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-5 से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर प्रतिधारण दर 61.1 प्रतिशत से बढ़कर 71.9 प्रतिशत तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर 43.6 प्रतिशत से बढ़कर 55.0 प्रतिशत हो गई है। प्रतिधारण दर में यह वृद्धि दर्शाती है कि विद्यालय में प्रवेश लेने वाली अधिक बालिकाएँ अब अपनी शिक्षा निर्धारित स्तर तक पूर्ण कर रही हैं। इसका सीधा संबंध ड्रॉपआउट दर में कमी तथा संक्रमण दर में वृद्धि से भी है।

तालिका–6

लैंगिक समानता सूचकांक (GPI)

वर्ष /स्तर	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26
माध्यमिक	0.99	1.00	1.02	1.02	1.04	1.0
उच्च माध्यमिक	1.03	1.02	1.07	1.07	1.08	1.1

स्रोत – UDISE+ 2020-21 to 2025-26, Ministry of Education

तालिका-6 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर GPI वर्ष 2020–21 में 0.99 से बढ़कर वर्ष 2024–25 में 1.04 तक पहुँचा, जबकि उच्च माध्यमिक स्तर पर यह 1.03 से बढ़कर 1.10 हो गया। GPI का मान 1.00 या उससे अधिक होना इस बात का संकेत है कि शिक्षा में लड़कियों और लड़कों को लगभग समान अवसर प्राप्त हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर GPI का 1 से अधिक होना यह दर्शाता है कि कुछ वर्षों में बालिकाओं की भागीदारी लड़कों से भी अधिक रही है।

यह परिवर्तन सामाजिक सोच में बदलाव, महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा सरकारी नीतियों की सफलता को प्रदर्शित करता है। फिर भी क्षेत्रीय एवं सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

उपरोक्त तालिकाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि यद्यपि माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, तथापि अनेक संरचनात्मक एवं सामाजिक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, जिससे बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके।

माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि भारत में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, तथापि माध्यमिक स्तर पर आज भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं प्रशासनिक स्तर पर दिखाई देती हैं। इन बाधाओं के कारण अनेक बालिकाएँ अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पातीं तथा विद्यालय त्याग करने के लिए विवश हो जाती हैं।

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ

भारतीय समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ने के बावजूद कई क्षेत्रों में पारंपरिक मान्यताएँ एवं रूढ़िवादी सोच अभी भी बालिका शिक्षा को प्रभावित करती हैं। अनेक परिवारों में बालकों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है जबकि बालिकाओं की शिक्षा को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया जाता है। कुछ समुदायों में यह धारणा प्रचलित है कि बालिकाओं का मुख्य कार्य घरेलू उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना है। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा को अनावश्यक समझा जाता है। यह मानसिकता माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की निरंतरता में बाधा उत्पन्न करती है।

2. आर्थिक समस्याएँ

गरीबी बालिका शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए शिक्षा पर होने वाला व्यय एक अतिरिक्त बोझ प्रतीत होता है। यद्यपि सरकार द्वारा अनेक सुविधाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती हैं, फिर भी परिवहन, अध्ययन सामग्री एवं अन्य आवश्यकताओं पर होने वाला खर्च परिवारों को प्रभावित करता है। कई परिवारों में बालिकाओं को घरेलू कार्यों अथवा पारिवारिक आय में सहयोग हेतु विद्यालय छोड़ना पड़ता है। आर्थिक अभाव के कारण उनकी शिक्षा बीच में ही बाधित हो जाती है।

3. शीघ्र विवाह की समस्या

ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में बाल विवाह की समस्या अभी भी पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है। अनेक बालिकाओं का विवाह माध्यमिक शिक्षा पूर्ण होने से पूर्व ही कर दिया जाता है। विवाह के पश्चात अधिकांश बालिकाएँ अपनी शिक्षा जारी नहीं रख पातीं, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति रुक जाती है।

4. विद्यालयीय अवसंरचना की कमी

विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की कमी भी बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है। विशेष रूप से स्वच्छ एवं पृथक शौचालयों का अभाव, पेयजल की अपर्याप्त व्यवस्था तथा सुरक्षित विद्यालयी वातावरण की कमी बालिकाओं की नियमित उपस्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या सीमित होने के कारण बालिकाओं को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। इससे अभिभावकों की चिंता बढ़ती है तथा कई बार बालिकाओं की शिक्षा बाधित हो जाती है।

5. सुरक्षा संबंधी चिंताएँ

माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के समक्ष सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। विद्यालय आने-जाने के दौरान सुरक्षा संबंधी आशंकाएँ अभिभावकों को चिंतित करती हैं। विशेष रूप से दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर रूप में दिखाई देती है। सुरक्षित परिवहन व्यवस्था के अभाव में अनेक बालिकाएँ नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा पातीं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ प्रभावित होती हैं।

6. लैंगिक भेदभाव

समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता बालिका शिक्षा को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। कई परिवारों में संसाधनों के वितरण के समय बालकों को प्राथमिकता दी जाती है। इससे बालिकाओं के शैक्षिक अवसर सीमित हो जाते हैं। लैंगिक पूर्वाग्रह बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर भी प्रभाव डालते हैं। शिक्षा में समान अवसरों की उपलब्धता के बावजूद व्यवहारिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ बनी रहती हैं।

7. अभिभावकों की अशिक्षा एवं जागरूकता का अभाव

अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति बालिकाओं की शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। अशिक्षित अथवा कम शिक्षित अभिभावक शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों को पर्याप्त रूप से नहीं समझ पाते। परिणामस्वरूप वे बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अपेक्षित रुचि नहीं दिखाते। जागरूकता के अभाव में अनेक परिवार सरकारी योजनाओं एवं शैक्षिक सुविधाओं का भी पूरा लाभ नहीं उठा पाते।

8. डिजिटल विभाजन (Digital Divide)

वर्तमान समय में शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ गया है। परंतु ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं के पास डिजिटल संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होती। स्मार्टफोन, इंटरनेट तथा डिजिटल उपकरणों की कमी उनके शैक्षिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। कोविड-19 महामारी के दौरान यह समस्या विशेष रूप से सामने आई, जब अनेक बालिकाएँ ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह गईं।

9. विद्यालय त्याग (Dropout) की समस्या

माध्यमिक स्तर पर विद्यालय त्याग की समस्या अभी भी एक गंभीर चुनौती है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत कारणों से अनेक बालिकाएँ अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ देती हैं। इससे उनकी उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। विद्यालय त्याग की समस्या का समाधान बालिका शिक्षा के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

10. जनजातीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों की विशेष चुनौतियाँ

सोनभद्र जैसे जनजातीय एवं भौगोलिक दृष्टि से विस्तृत क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की चुनौतियाँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। परिवहन सुविधाओं का अभाव, आर्थिक विषमता, सीमित शैक्षिक संसाधन तथा सामाजिक परिस्थितियाँ बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। इन क्षेत्रों में विशेष नीतिगत हस्तक्षेप एवं स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं संरचनात्मक चुनौतियों से प्रभावित है। यद्यपि सरकार एवं समाज द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी इन समस्याओं के समाधान हेतु समन्वित एवं दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है। बालिका शिक्षा की चुनौतियों को दूर किए बिना समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा व्यवस्था की स्थापना संभव नहीं है।

बालिका शिक्षा के विकास हेतु सरकारी योजनाएँ एवं पहल

भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि करना, विद्यालय त्याग की समस्या को कम करना, शैक्षिक अवसरों में समानता स्थापित करना तथा बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप बालिका शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है।

1. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में प्रारंभ की गई "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" योजना बालिकाओं के संरक्षण, शिक्षा एवं सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना का उद्देश्य समाज में बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। इस योजना के माध्यम से बालिका शिक्षा को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप देने का प्रयास किया गया है। परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रों में बालिकाओं के विद्यालयी नामांकन एवं उपस्थिति में वृद्धि दर्ज की गई है।

2. समग्र शिक्षा अभियान

समग्र शिक्षा अभियान विद्यालयी शिक्षा के विकास हेतु एक व्यापक कार्यक्रम है। इस योजना का उद्देश्य प्राथमिक से लेकर माध्यमिक स्तर तक गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विकास, शिक्षकों का प्रशिक्षण, छात्र-छात्राओं के लिए शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता तथा बालिकाओं की शिक्षा को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा में लैंगिक समानता को विशेष महत्व प्रदान किया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा व्यवस्था को इस प्रकार विकसित किया जाए कि बालिकाओं को सुरक्षित, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। नीति में "Gender Inclusion Fund" की व्यवस्था का उल्लेख किया गया है, जिसका उद्देश्य बालिकाओं एवं अन्य वंचित समूहों की शिक्षा को बढ़ावा देना है। यह नीति बालिका शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक दस्तावेज के रूप में उभरी है।

4. छात्रवृत्ति योजनाएँ

आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ संचालित की जाती हैं। इन योजनाओं के माध्यम से बालिकाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है, जिससे वे अपनी शिक्षा बिना किसी आर्थिक बाधा के जारी रख सकें। छात्रवृत्ति योजनाएँ विद्यालय त्याग की समस्या को कम करने में भी सहायक सिद्ध हुई हैं।

5. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक एवं यूनिफॉर्म वितरण

सरकार द्वारा बालिकाओं को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, यूनिफॉर्म तथा अन्य शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इन सुविधाओं का उद्देश्य शिक्षा पर होने वाले व्यय को कम करना तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सहयोग प्रदान करना है। इन प्रयासों से विद्यालयों में नामांकन एवं उपस्थिति बढ़ाने में सहायता मिली है।

6. कन्या सुमंगला योजना (उत्तर प्रदेश)

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित कन्या सुमंगला योजना बालिकाओं के जन्म से लेकर शिक्षा तक विभिन्न चरणों में आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस योजना का उद्देश्य बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना तथा उनकी शिक्षा को प्रोत्साहित करना है। राज्य में बालिका शिक्षा के विस्तार में इस योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

7. मध्याह्न भोजन एवं पोषण कार्यक्रम

विद्यालयों में संचालित पोषण कार्यक्रम एवं मध्याह्न भोजन योजना का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी बालिका शिक्षा पर पड़ता है। इन योजनाओं के कारण आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों, विशेषकर बालिकाओं की विद्यालय में उपस्थिति बढ़ती है।

8. साइकिल वितरण एवं परिवहन सहायता योजनाएँ

कई राज्यों में बालिकाओं को विद्यालय तक पहुँचने के लिए साइकिल वितरण अथवा परिवहन सहायता प्रदान की जाती है। इन योजनाओं का उद्देश्य विद्यालय की दूरी के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं को कम करना है।विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इन योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है।

विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप बालिकाओं के नामांकन, उपस्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हुआ है। तथापि अनेक क्षेत्रों में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, जन-जागरूकता तथा नियमित निगरानी की आवश्यकता बनी हुई है। कई बार जानकारी के अभाव, प्रशासनिक कठिनाइयों तथा सामाजिक बाधाओं के कारण योजनाओं का पूर्ण लाभ लक्षित समूह तक नहीं पहुँच पाता। अतः योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए समुदाय, विद्यालय एवं प्रशासन के मध्य बेहतर समन्वय आवश्यक है।

निष्कर्ष

सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ एवं कार्यक्रम बालिका शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन पहलों ने शिक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया है तथा बालिकाओं को विद्यालय से जोड़ने में सहायता प्रदान की है। फिर भी इन योजनाओं की सफलता के लिए प्रभावी क्रियान्वयन, सतत मूल्यांकन तथा सामाजिक सहयोग अत्यंत आवश्यक है। बालिका शिक्षा के क्षेत्र में स्थायी एवं व्यापक परिवर्तन लाने के लिए सरकारी प्रयासों के साथ-साथ समाज की सक्रिय भागीदारी भी अनिवार्य है।

संदर्भ सूची (References)

[1]. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

[2]. International Institute for Population Sciences (IIPS), & ICF. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India (Vol. I). Mumbai: IIPS

[3]. Ministry of Education. (2026). Unified District Information System for Education Plus (UDISE+): Publications and Statistics (2020–21 to 2025–26). Department of School Education & Literacy, Government of India. UDISE+ Publications and Statistics

[4]. Nanda, V. K. (2017). Women Education in India. New Delhi: Anmol Publications.

[5]. Mukherjee, S. (2020). "Girls' Education and Social Development in India." International Journal of Educational Research, 12(3), 45–58.

[6]. Verma, S., & Gupta, R. (2021). "Challenges of Secondary Education among Girls in Rural India." Journal of Educational Studies, 18(2), 65–78.

[7]. NCTE. (2021). Teacher Education and Gender Equality. New Delhi.

[8]. Tilak, J. B. G. (2018). Education and Development in India. New Delhi: Sage Publications.

[9]. National Statistical Office (NSO). (2022). Household Social Consumption on Education in India. Government of India.

[10]. पाण्डेय,आर.एस.(2019). *भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

[11]. शर्मा, एस. पी. (2020). *महिला शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन.* नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

[12]. सिंह, वी. पी. (2021). *बालिका शिक्षा: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

Cite this Article:

कृष्ण कुमार भारती (2026). माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा: स्थिति एवं चुनौतियाँ, International Journal of Social Nexus Review. 1(1), 1–9.

Journal URL: *https://socialnexusreview.com/*

Disclaimer/Publisher's Note*: The views, findings, and conclusions presented in this article are entirely the responsibility of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any inaccuracies, copyright infringements, or any consequences resulting from the use or interpretation of the published content.*